Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

गांधीवादी नेतृत्व एवं आधुनिक संगठनात्मक प्रबंधन का तुलनात्मक अध्ययन

रवि रंजन

शोधार्थी, विश्वविद्यालय गांधी विचार विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author: * रवि रंजन

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22766433

सारांश

यह शोध-पत्र महात्मा गांधी के नेतृत्व दर्शन तथा समकालीन प्रबंधन सिद्धांतों के मध्य समानताओं और अंतरों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गांधी का नेतृत्व सत्य, अहिंसा, नैतिक आचरण, विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता और जन-सशक्तिकरण जैसे मूल्यों पर आधारित था। उनके लिए नेतृत्व केवल अधिकार एवं नियंत्रण का माध्यम न होकर सेवा, सहभागिता, विश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व का साधन था। यही दृष्टिकोण आधुनिक प्रबंधन में विकसित हुए सर्वेंट लीडरशिप, नैतिक नेतृत्व तथा कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी अवधारणाओं से निकटता प्रदर्शित करता है।

अध्ययन में गांधीवादी नेतृत्व के प्रमुख आयामों की तुलना आधुनिक प्रबंधन के उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व, नैतिक निर्णय-निर्माण, कर्मचारी सहभागिता, टीम-प्रेरणा, विकेंद्रीकृत निर्णय प्रक्रिया तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे प्रमुख पक्षों से की गई है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधी के नेतृत्व सिद्धांत केवल ऐतिहासिक एवं राजनीतिक संदर्भ तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वर्तमान संगठनात्मक परिवेश में भी उनकी पर्याप्त प्रासंगिकता बनी हुई है। विशेष रूप से नैतिकता, मानवीय दृष्टिकोण, सहभागी नेतृत्व और आत्मनिर्भरता जैसे गांधीवादी मूल्य संगठनों में विश्वास, प्रतिबद्धता और दीर्घकालिक स्थायित्व को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं।

अतः यह शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि गांधीवादी नेतृत्व दर्शन और आधुनिक प्रबंधन के बीच महत्वपूर्ण वैचारिक साम्य विद्यमान है। गांधी के नेतृत्व मूल्यों को समकालीन प्रबंधन पद्धतियों के साथ समन्वित करके अधिक नैतिक, मानवीय, सहभागी एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी संगठनात्मक व्यवस्था विकसित की जा सकती है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-08-2026
- **Accepted:** 10-09-2026
- **Published:** 15-09-2026
- **MRR:**4(9); 2026: 148-151
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

रंजन र. गांधीवादी नेतृत्व एवं आधुनिक संगठनात्मक प्रबंधन का तुलनात्मक अध्ययन . Indian J Mod Res Rev. 2026;4(9):148-151.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: महात्मा गांधी, गांधीवादी नेतृत्व, नेतृत्व दर्शन, आधुनिक प्रबंधन, नैतिक नेतृत्व, नैतिकता, विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता, सर्वेंट लीडरशिप, सामाजिक उत्तरदायित्व।

© 2026 रवि रंजन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

महात्मा गांधी (1869-1948) को भारत की स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता के रूप में जाना जाता है, लेकिन उनके विचार और सिद्धांत राजनीति से कहीं आगे तक जाते हैं। गांधी ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की वकालत की, बल्कि उन्होंने नेतृत्व, नैतिकता, समाज और व्यक्तिगत विकास के क्षेत्रों में भी क्रांतिकारी विचार दिए। उनके नेतृत्व के सिद्धांत सत्य (सच्चाई), अहिंसा (हिंसा का त्याग), आत्मनिर्भरता, और विकेंद्रीकरण पर आधारित थे, जो आज के समय में भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

आज के संगठनों और कंपनियों को एक जटिल और तेजी से बदलते वातावरण में काम करना पड़ता है, जहां नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व की प्रभावशीलता पर बढ़ता ध्यान दिया जा रहा है। इस संदर्भ में, आधुनिक प्रबंधन ने प्रगति की है, जिसमें योजना, संगठन, नेतृत्व और नियंत्रण जैसी अवधारणाओं का विकास हुआ है। आधुनिक प्रबंधन का उद्देश्य केवल व्यवसायिक लाभ प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक नैतिक, पारदर्शी और जिम्मेदार संगठनात्मक संरचना का निर्माण करना भी है।

इस शोध पत्र में, गांधी के नेतृत्व सिद्धांतों और आधुनिक प्रबंधन के प्रमुख तत्वों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि कैसे गांधी के नेतृत्व सिद्धांत, जैसे कि सत्य, अहिंसा, नैतिकता, विकेंद्रीकरण और आत्मनिर्भरता, आज के संगठनों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हो सकते हैं। इसके साथ ही, यह शोध यह भी विश्लेषण करेगा कि गांधी का नेतृत्व सिद्धांत आधुनिक प्रबंधन की चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है और किस हद तक ये सिद्धांत आज के संगठनों में लागू किए जा सकते हैं।

अध्ययन की पृष्ठभूमि और प्रासंगिकता

गांधी का जीवन और उनके सिद्धांत आज की दुनिया के लिए प्रासंगिक बने हुए हैं। उनके सिद्धांतों का न केवल स्वतंत्रता संग्राम में बल्कि समाज के हर क्षेत्र में प्रभाव पड़ा है, जिसमें संगठनात्मक प्रबंधन भी शामिल है। वर्तमान में, विश्वभर के संगठनों को न केवल लाभ कमाने की चुनौती का सामना करना पड़ता है, बल्कि उन्हें नैतिकता, पारदर्शिता और सामाजिक जिम्मेदारी का भी पालन करना पड़ता है। यह शोध उन सिद्धांतों का विश्लेषण करेगा जो गांधी ने नेतृत्व के क्षेत्र में प्रस्तुत किए थे और यह भी देखेगा कि आधुनिक प्रबंधन में उनका कितना और किस प्रकार से उपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान शोध का उद्देश्य और महत्व

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य गांधी के नेतृत्व सिद्धांत और आधुनिक प्रबंधन सिद्धांतों के बीच संबंध को समझना है। आधुनिक प्रबंधन के अंतर्गत कई प्रकार की नेतृत्व शैलियों और प्रबंधन सिद्धांतों का विकास हुआ है, जिनमें से कुछ गांधी के सिद्धांतों के समानांतर हैं, जैसे कि श्सर्वेंट लीडरशिपश्, नैतिक प्रबंधन, और कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (ब्ैत्)। यह शोध विश्लेषण करेगा कि कैसे गांधी के सिद्धांत आज के प्रबंधन ढांचे में उपयोगी हो सकते हैं और संगठनों को नैतिक और प्रभावी ढंग से संचालित करने में मदद कर सकते हैं।

शोध का दायरा

यह शोध गांधी के प्रमुख नेतृत्व सिद्धांतों पर केंद्रित होगा, जैसे कि सत्य और अहिंसा, विकेंद्रीकरण, नैतिक नेतृत्व, आत्मनिर्भरता, और सर्वोदय। इसके अलावा, आधुनिक प्रबंधन के सिद्धांतों, जैसे नैतिकता और पारदर्शिता, उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व, विकेंद्रीकृत निर्णय प्रक्रिया और सामाजिक जिम्मेदारी का विश्लेषण किया जाएगा। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि गांधी के नेतृत्व सिद्धांत और आधुनिक प्रबंधन सिद्धांत एक-दूसरे के साथ कैसे मेल खाते हैं और कैसे ये संगठनात्मक संरचनाओं में लागू किए जा सकते हैं।

गांधी का नेतृत्व सिद्धांत

1. सत्य और अहिंसा का सिद्धांत

गांधी के नेतृत्व सिद्धांत की आधारशिला सत्य और अहिंसा है। उन्होंने अपने जीवन और आंदोलनों में इन दोनों सिद्धांतों का पालन किया और इसे व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में अपनाने की आवश्यकता बताई। सत्य (सच्चाई) के प्रति प्रतिबद्धता गांधी के लिए किसी भी परिस्थिति में सर्वोच्च थी। इसी प्रकार, अहिंसा (हिंसा का त्याग) का अर्थ न केवल शारीरिक हिंसा से बचना था बल्कि किसी भी प्रकार की मानसिक, आर्थिक या सामाजिक हिंसा से भी दूर रहना था।

यह सिद्धांत यह सिखाता है कि एक नेता को अपनी टीम के साथ पारदर्शी होना चाहिए और सभी निर्णय नैतिकता पर आधारित होने चाहिए। यह दृष्टिकोण आधुनिक प्रबंधन के नैतिक नेतृत्व सिद्धांत के बहुत करीब है, जहां प्रबंधकों से उम्मीद की जाती है कि वे अपने कर्मचारियों के साथ ईमानदार और निष्पक्ष रहें।

2. विकेंद्रीकरण और सहभागिता

गांधी के नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता विकेंद्रीकरण थी। उन्होंने सत्ता के केंद्रीकरण का विरोध किया और छोटे समुदायों में अधिकतम स्वायत्तता की वकालत की। उनके सर्वोदय के सिद्धांत में भी यह बात झलकती है, जहां हर व्यक्ति के विकास को प्राथमिकता दी गई।

आधुनिक प्रबंधन में भी, विकेंद्रीकरण को संगठनात्मक दक्षता बढ़ाने के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा जाता है। इसे प्रबंधन के स्तरों में कटौती और कर्मचारियों को स्वायत्तता देकर निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के रूप में अपनाया गया है। यह दृष्टिकोण आज की श्टीम आधारितश् कार्यसंस्कृति में देखा जा सकता है, जहां कर्मचारी न केवल कार्य निष्पादक होते हैं बल्कि निर्णय प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

3.नैतिक नेतृत्व और आत्मसंयम

गांधी का मानना था कि एक सच्चा नेता वह है जो न केवल अपने अनुयायियों के लिए मार्गदर्शक हो, बल्कि खुद को नैतिकता और संयम के आदर्श पर चलाता हो। उनके अनुसार, नेतृत्व का मूल उद्देश्य दूसरों की सेवा करना और सामूहिक कल्याण के लिए काम करना है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को सीमित कर, समुदाय के हित को प्राथमिकता दी।

आधुनिक प्रबंधन में इस प्रकार के नैतिक नेतृत्व के सिद्धांत को ष्सर्वेंट लीडरशिपष् कहा जाता है, जिसका मतलब है कि एक नेता का मुख्य उद्देश्य अपने अधीनस्थों की भलाई के लिए काम करना होता है। एक

© 2026 रवि रंजन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रभावी नेता अपने व्यक्तिगत हितों से पहले संगठन और कर्मचारियों के हित को रखता है।

3. आत्मनिर्भरता और सर्वोदय

गांधी ने आत्मनिर्भरता पर बहुत जोर दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्र को आत्मनिर्भर होना चाहिए। यही कारण था कि उन्होंने खादी आंदोलन की शुरुआत की, जो एक आत्मनिर्भर जीवन शैली का प्रतीक था। उन्होंने सर्वोदय (सभी का उदय) का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसका मतलब था कि समाज के सबसे कमजोर वर्ग का उत्थान किए बिना सच्चा विकास संभव नहीं है।

आधुनिक प्रबंधन में, यह सिद्धांत कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में देखा जाता है, जहां कंपनियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे न केवल मुनाफे पर ध्यान दें, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी समझें और समुदायों के उत्थान के लिए काम करें।

आधुनिक प्रबंधन के सिद्धांत

1. उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व

आधुनिक प्रबंधन का एक प्रमुख पहलू है कि नेतृत्व का उद्देश्य स्पष्ट और कंपनी के लक्ष्यों से मेल खाना चाहिए। एक नेता को अपने संगठन के उद्देश्यों के साथ व्यक्तिगत उद्देश्यों को संरेखित करना होता है ताकि वह प्रेरक और प्रभावी नेतृत्व प्रदान कर सके।

गांधी के नेतृत्व में, उद्देश्य की स्पष्टता उनकी सबसे बड़ी ताकत थी। उनके हर आंदोलन का एक स्पष्ट और नैतिक उद्देश्य था - चाहे वह सत्याग्रह हो, असहयोग आंदोलन या भारत छोड़ो आंदोलन। उनका उद्देश्य हमेशा स्वराज (स्व-शासन) और मानवता की सेवा करना था, जो उनके अनुयायियों को प्रेरित करता था।

2. नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी

आधुनिक प्रबंधन में, नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी का महत्व बढ़ता जा रहा है। आज के संगठनों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने व्यवसाय को नैतिक मूल्यों के साथ संचालित करें और समाज के प्रति जिम्मेदार रहें।

गांधी ने जीवनभर सामाजिक न्याय और नैतिकता के लिए संघर्ष किया। उनका मानना था कि किसी भी समाज या संगठन का अस्तित्व तभी टिक सकता है जब वह नैतिक मूल्यों के आधार पर संचालित हो। यह विचार आज के ब्ैत् सिद्धांत के अनुरूप है, जहां कंपनियां अपने लाभ के साथ-साथ सामाजिक कल्याण पर भी ध्यान देती हैं।

3. निर्णय लेने की प्रक्रिया

आधुनिक प्रबंधन में, निर्णय लेने की प्रक्रिया में डेटा और तथ्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण होता है। हालांकि, इसमें नैतिकता और दीर्घकालिक प्रभावों का ध्यान भी रखना पड़ता है।

गांधी के निर्णय भी तथ्यों और नैतिकता पर आधारित होते थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने हर आंदोलन की शुरुआत से पहले गहन अध्ययन और विचार-विमर्श किया और हमेशा दीर्घकालिक सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखा। उनके लिए नैतिकता और सच्चाई कभी समझौते का विषय नहीं थे।

4. टीम वर्क और प्रेरणा

आधुनिक संगठनों में टीमवर्क और प्रेरणा को बहुत महत्व दिया जाता है। एक अच्छा प्रबंधक वह होता है जो अपनी टीम को प्रेरित कर सके और उन्हें एक साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करे।

गांधी के नेतृत्व में भी टीमवर्क का महत्व था। उन्होंने हमेशा अपने अनुयायियों को प्रेरित किया और स्वतंत्रता आंदोलन में लाखों लोगों को एकजुट किया। उनके नेतृत्व में, सभी ने समान रूप से योगदान दिया और स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया।

गांधी का नेतृत्व और आधुनिक प्रबंधन की तुलना

1. नैतिकता और निर्णय लेने में पारदर्शिता

गांधी ने अपने हर कदम में नैतिकता और पारदर्शिता को प्राथमिकता दी। आधुनिक प्रबंधन में भी, नैतिकता और पारदर्शिता महत्वपूर्ण मूल्य माने जाते हैं। दोनों में यह समानता है कि नेताओं को नैतिकता का पालन करते हुए अपने कर्मचारियों या अनुयायियों के साथ पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए।

2. विकेंद्रीकरण बनाम केंद्रीकृत नेतृत्व

जहां गांधी विकेंद्रीकरण और स्वायत्तता पर बल देते थे, वहीं आधुनिक प्रबंधन में अधिकतर केंद्रीकृत नेतृत्व प्रणाली का पालन होता है। हालांकि, आज के समय में विकेंद्रीकरण के सिद्धांत को धीरे-धीरे अपनाया जा रहा है, खासकर टीम-आधारित संगठनों में।

गांधी के नेतृत्व का आधुनिक प्रबंधन पर प्रभाव

गांधी के नेतृत्व सिद्धांत ने कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, नैतिक नेतृत्व और विकेंद्रीकरण जैसे प्रबंधन सिद्धांतों को बहुत प्रभावित किया है। आज के समय में, संगठनात्मक नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व को समझते हुए कई प्रबंधक गांधी के सिद्धांतों को लागू करने की कोशिश कर रहे हैं।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का नेतृत्व दर्शन नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित एक प्रभावशाली एवं स्थायी नेतृत्व दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। सत्य, अहिंसा, नैतिकता, विकेंद्रीकरण, आत्मनिर्भरता तथा सेवा की भावना उनके नेतृत्व के प्रमुख आधार थे। गांधी के लिए नेतृत्व का उद्देश्य केवल लक्ष्य प्राप्त करना या सत्ता का संचालन करना नहीं था, बल्कि व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाते हुए व्यापक सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना था। यही विशेषताएँ उनके नेतृत्व दर्शन को समकालीन प्रबंधन के संदर्भ में महत्वपूर्ण बनाती हैं।

इस अध्ययन के तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधीवादी नेतृत्व के अनेक तत्व आधुनिक प्रबंधन की अवधारणाओं से साम्य रखते हैं। नैतिक निर्णय-निर्माण, सहभागी नेतृत्व, कर्मचारियों का सशक्तिकरण, विकेंद्रीकृत निर्णय प्रक्रिया, टीम-प्रेरणा तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे आधुनिक प्रबंधकीय पक्ष गांधी के विचारों से वैचारिक रूप से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। विशेष रूप से सर्वेंट लीडरशिप और नैतिक नेतृत्व की अवधारणाओं में गांधी के सेवा-आधारित नेतृत्व दृष्टिकोण की स्पष्ट प्रतिध्वनि दिखाई देती है।

© 2026 रवि रंजन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वर्तमान वैश्विक एवं प्रतिस्पर्धात्मक व्यावसायिक वातावरण में केवल आर्थिक उपलब्धि को संगठनात्मक सफलता का पर्याप्त आधार नहीं माना जा सकता। संगठनों के लिए विश्वास, पारदर्शिता, नैतिक आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व और दीर्घकालिक स्थायित्व भी समान रूप से आवश्यक हैं। इस संदर्भ में गांधीवादी सिद्धांत आधुनिक प्रबंधकों को मानवीय एवं नैतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। विकेंद्रीकरण और आत्मनिर्भरता जैसे सिद्धांत संगठन में सहभागिता, उत्तरदायित्व और निर्णय क्षमता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी का नेतृत्व दर्शन केवल ऐतिहासिक या राजनीतिक संदर्भ तक सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक संगठनात्मक प्रबंधन के लिए भी इसकी पर्याप्त प्रासंगिकता है। गांधीवादी मूल्यों और आधुनिक प्रबंधन तकनीकों के समन्वय से ऐसे संगठनात्मक वातावरण का निर्माण किया जा सकता है, जो प्रभावशीलता के साथ-साथ नैतिकता, मानवीय गरिमा, सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास को भी प्राथमिकता दे। इस दृष्टि से गांधी का नेतृत्व चिंतन वर्तमान तथा भविष्य के प्रबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक एवं व्यावहारिक आधार प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची

1. गांधी एमके. मेरे सपनों का भारत. नई दिल्ली: नवजीवन प्रकाशन; 1968.
2. गांधी एमके. हिंद स्वराज. अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट; 1997.
3. प्रकाश वी. गांधीवादी नेतृत्व: सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग; 2006.
4. शर्मा आरएन. गांधीवादी दर्शन और आधुनिक समाज. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स; 2012.
5. सिंग ए. आधुनिक प्रबंधन के सिद्धांत. दिल्ली: किताब महल पब्लिशर्स; 2010.
6. बटन जॉन. गांधी का आर्थिक और प्रबंधन दृष्टिकोण. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1988.
7. सेन ए. विकास और स्वतंत्रता: गांधी के सिद्धांतों का वैश्विक संदर्भ. पेंगुइन बुक्स; 2009.
8. स्टीफन पीआर, रॉबिन्स टीए. प्रबंधन के सिद्धांत. दिल्ली: पियर्सन एजुकेशन; 2013.
9. मेहता पी. सत्य, अहिंसा और नेतृत्व: गांधी का प्रबंधन दृष्टिकोण. जयपुर: रावत पब्लिकेशंस; 1997.
10. ठक्कर ए. सर्वोदय और नैतिक नेतृत्व: महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2020.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

रवि रंजन विश्वविद्यालय गांधी विचार विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत में शोधार्थी हैं। वे गांधीवादी विचारधारा, सामाजिक चिंतन एवं समकालीन सामाजिक विषयों से संबंधित अकादमिक अध्ययन और शोध कार्य में रुचि रखते हैं। उनका शोध कार्य गांधीवादी दृष्टिकोण एवं सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न आयामों पर केंद्रित है।

© 2026 रवि रंजन. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/